देश विदेश की कहानियॉ ः

अकबर बीरबल की कहानियॉ

भाग 1

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Akbar Birbal Ki Kahaniyan (Stories of Akbar and Birbal)
Cover Page picture: Akbar and Birbal
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Web Site: http://sushmajee.com/shishusansar/stories-birbal/index-birbal.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of India

विंडसर, कैनेडा

दिसम्बर 2018

Contents

अकबर और बीरबल का परिचय 7

अकबर बीरबल की मुलाकात 13

महेश दास बीरबल बना 17

एक सेर चूना 22

1 सवाल पर सवाल 30

2 गधा कौन□ 31

3 ऊँट की गर्दन टेढ़ी क्यों□ 32

4 बीरबल ने एक पहेली सुलझायी 33

5 अकबर के लिये फूल 35

6 बीरबल का मीठा जवाब 37

7 बीरबल ने मेहमान को पहचाना 39

8 थोड़ी कम थोड़ी ज्यादा 41

9 बीरबल का खूबसूरत जवाब 42

10 सबसे अधिक कुलीन भिखारी 43

11 वफादार माली 44

12 बीरबल ने अपने आपको बचाया 46

13 बीरबल ने न्याय किया 48

14 केवल एक सवाल 50

15 बीरबल ने एक ज्योतिषी की जान बचायी 51

16 जल्दबाज़ी का फैसला 52

17 बीरबल ने इम्तिहान पास किया..... 54

18 भारी बोझा 55

19 बीरबल की खिचड़ी..... 57

20 ऊँट का दूध 62

21 पिंजरे का शेर 64

22 राज्य में कितने कौए 67

23 अकबर का लालच 70

24 आम और उसकी गुठलियाँ 72

25 कुछ छोटी छोटी कहानियाँ..... 73

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

अकबर और बीरबल का परिचय

बच्चो आज हम तुम्हें अकबर और बीरबल की कहानियॉ सुनाते हैं। पर क्या तुम जानते हो कि यह अकबर कौन था और यह बीरबल कौन था।

अकबर हमारे भारत देश के एक बहुत बड़े राजा हो गये हैं या यों कहना चाहिये कि सम्राट हो गये हैं। इनका पूरा नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर पादशाह गाजी था। बहुत लम्बा नाम था न? पर वह केवल बादशाह अकबर के नाम से ही मशहूर थे।

अकबर बादशाह का जन्म **1542** ईसवी में हुआ था और यह **1560** ईसवी में राजगद्दी पर बैठे थे। यानी उस समय यह केवल **18** साल के थे जब ये राजगद्दी पर बैठे। **1605** में इनकी मृत्यु हो गयी थी। इस तरह इन्होंने **45** साल राज्य किया।

इनके बारे में तुमको एक और बात पता है क्या? वह यह कि बादशाह अकबर को पढ़ना लिखना नहीं आता था। हालॉकि इनको न पढ़ना आता था न लिखना पर यह थे बहुत होशियार। इन्होंने अपने दरबार में बहुत सारे विद्वानों को इकट्ठा कर रखा था।

इन विद्वानों में से **9** विद्वान बहुत मशहूर थे और वे अकबर के दरबार के नवरत्न या नौ रत्न कहलाते थे। इन नौ रत्नों में भी अकबर के **6** रत्न बहुत ज़्यादा मशहूर थे। ये थे तानसेन, राजा टोडरमल, अबुल फ़ज़ल, फ़ैज़ी, राजा मानसिंह और बीरबल।

बच्चो तानसेन का नाम तो तुमने सुना ही होगा। वह अकबर के समय में ही थे और उनके दरबार के एक रत्न थे। तानसेन हमारे देश के एक बहुत बड़े गायक थे।

कहते हैं कि एक बार राजा अकबर ने उनकी गायकी पर शक करके उनको दीपक राग गाने के लिए कहा। जैसा कि इस राग के नाम से ही लगता है इसके गाने से आग लग जाती थी।

तानसेन ने राजा को बहुत मना किया कि हुजूर आप मुझसे दीपक राग गाने के लिए न कहें गड़बड़ हो जायेगी परन्तु राजा न माने और जिद पकड़ बैठे कि वह आज दीपक राग सुन कर ही रहेंगे।

सो बेचारे तानसेन कुछ न कर सके सिर्फ इतना ही बोले "महाराज इसके परिणाम के फिर आप ही जिम्मेदार होंगे।" और उन्होने दीपक राग गाना शुरू कर दिया।

वह गाते गये, और गाते गये, और गाते गये। धीरे धीरे उसकी गरमी चारों ओर फैलने लगी। तानसेन गाते गये, और गाते गये, गरमी बढ़ती गयी और बढ़ती गयी। दरबार में बैठे लोगों के बदन गरमी की वजह से जलने लगे।

तानसेन तो अपनी मस्ती में गा रहे थे पर दरबारियों को वहॉ बैठना मुश्किल हो गया। कुछ लोग तो इधर उधर खिसकने के चक्कर में थे पर यह तो राजा और तानसेन दोनों का अपमान था सो उनको वहीं बैठना पड़ा।

तानसेन गाते गये और गाते गये कि अचानक दरबार में रखे दिये जल उठे। अकबर और दरबारी यह देख कर आश्चर्यचकित हो उठे कि गाने से दिये कैसे जल सकते हैं। परन्तु यह आश्चर्य तो उनकी ऑखों के सामने ही घट चुका था।

कुछ ही देर में दरबार में लगे कपड़ों में भी आग लग गयी। यह देख कर तो वहॉ बैठे सभी घबरा गये। राजा और दरबारियों ने तानसेन को गाने से रोकने की कोशिश की परन्तु तानसेन अपना गाना गाने में इतने तल्लीन थे कि उनके ऊपर कोई असर ही नहीं हो रहा था। राजा और दरबारी सभी परेशान थे।

तभी किसी ने सलाह दी कि "महाराज, तानसेन की बेटी भी इतना ही अच्छा गाती है। उसको बुलाया जाए तो वह शायद इस आग को शान्त कर सके।"

तुरन्त ही तानसेन की बेटी को बुलाया गया।वह आयी और उसने राग मेघ मल्हार गाना शुरू किया। उसके गाने से आग की गरमी कम होती चली गयी और अन्त मे दरबार में वर्षा हो गयी।

बाद में राजा ने तानसेन से पूछा "तानसेन, यह तुमने क्या किया?"

तानसेन सिर झुका कर बोले — "मैने तो पहले ही कहा था हुजूर कि मुझसे राग दीपक गाने के लिये न कहिये पर आप माने ही नहीं।"

अकबर यह सुन कर चुप हो गये और फिर उन्होंने तानसेन से कभी कोई ऐसी प्रार्थना नहीं की जिसको तानसेन ने मना कर दिया हो। तो बच्चों, ऐसा था तानसेन और उसकी बेटी का गाना और ऐसा था राजा अकबर के दरबार का एक रत्न।

दूसरे थे राजा टोडरमल। राजा टोडरमल राज्य का ख़जाना संभालते थे। तीसरे थे अबुल फ़ज़ल। ये एक इतिहासकार थे। चौथे इनके भाई फ़ैज़ी थे जो बहुत बड़े कवि थे। पॉचवे थे राजा मानसिंह जो अपनी बहादुरी के लिये मशहूर थे।

और इनमें सबसे ज्यादा मशहूर थे बीरबल जो आज भी अपनी मज़ाकिया कहानियों और हाजिर जवाबी के सहारे सारे भारत में ज़िन्दा हैं।

वह केवल एक मज़ाकिया ही नहीं बल्कि वह राजा के अपने सलाहकार भी थे। राजा उनसे बहुत सारी परिस्थतियों में सलाह लिया करते थे। राजा उनको अक्सर अपने साथ ही रखते थे क्योंकि क्या पता राजा को बीरबल की कब जरूरत पड़ जाये। है न भई□

जब अकबर और बीरबल की बात छिड़ ही गयी है तो हम तुम्हें अकबर के बारे में कुछ और मज़ेदार बातें भी बता दें। यह तो हम तुम्हें बता ही चुके हैं कि अकबर एक बेपढ़े लिखे बादशाह थे।

अकबर के बेटे का नाम था सलीम जो सम्राट जहॉगीर के नाम से मशहूर हुआ और सम्राट अकबर के बाद भारत की गद्दी पर बैठा।

उसने अपने पिता के बारे लिखा है कि हालॉकि राजा अकबर पढ़ा लिखे नहीं थे पर वह बेपढ़े लिखे बिल्कुल भी नहीं लगते थे। वह बहुत मेहनती राजा थे। कहा जाता है कि वह रात में केवल तीन घन्टे ही सोते थे।

बच्चों सोने की बात पर याद आयी फ्रांस के राजा नेपोलियन की। उसके बारे में भी कुछ ऐसा ही मशहूर है। कहते हैं कि वह तो अपने घोड़े पर ही सोते थे। तो ऐसा होता था बड़े आदमियों के रहने का ढंग।

हॉ तो हम बात कर रहे थे राजा अकबर की और उनके दरबार के नौ रत्नों की। इन नौ रत्नों में दो रत्न सबसे ज़्यादा मशहूर थे□ तानसेन और बीरबल। तानसेन के बारे में तो हमने तुम्हें बता दिया, अब हम तुम्हें बीरबल के बारे में कुछ बताते हैं।

बीरबल राजा के बहुत ही बुद्धिमान सलाहकार थे लेकिन भारत भर में मशहूर थे वह अपनी हाजिर जवाबी के लिये। जानते हो हाजिर जवाबी किसे कहते हैं? हाजिर जवाबी कहते हैं किसी भी परिस्थिति में किसी भी बात का समझदारी से तुरन्त जवाब देना। तो बस बीरबल ऐसे ही थे।

वह बहुत सारे अजीबो गरीब सवालों का तुरन्त ही जवाब दे दिया करते थे और उनके पास हर समस्या का हल रहता था और हर सवाल का जवाब।

यही वजह थी कि राजा उनको बहुत चाहते थे और हमेशा अपने साथ रखते थे। कई बार बीरबल के जवाब थोड़े कड़वे होते थे परन्तु फिर भी राजा उनकी बातों का बुरा नहीं मानते थे।

एकाध बार राजा को बुरा भी लगा और उन्होंने बीरबल को दरबार से निकाल भी दिया परन्तु फिर राजा ने महसूस किया कि वह बीरबल के बिना नहीं रह सकते थे सो उन्होंने उनको फिर से वापस बुला लिया। साथ रहते रहते बीरबल राजा के बहुत अच्छे दोस्त भी बन गये थे।

तो आज हम तुमको उन्हीं बीरबल की कहानियॉ बताते हैं। कहानी पढ़ कर तुम यह जरूर सोचना कि यदि तुम उन परिस्थिति में होते तो तुम क्या करते या तुम क्या कहते।

पहली दो कहानियॉ बीरबल के परिचय की हैं जैसे बीरबल कौन थे और राजा को कहॉ मिले और फिर वह राजा के दरबार में कैसे आये। उनका नाम बीरबल कैसे पड़ा, आदि आदि।

उसके बाद हम बतायेंगे बीरबल के उनके अपने किस्से। उनको पढ़ो, हॅसो, और बीरबल की अक्लमन्दी की तारीफ करो।

अकबर बीरबल की मुलाकात

बादशाह अकबर बीरबल की मुलाकात कैसे हुई, या बीरबल बादशाह अकबर के दरबार में कैसे पहुँचे इसकी कई कहानियॉ कही जाती हैं।

उनमें से कुछ कहानियॉ हम यहॉ दे रहे हैं इनमे कौन सी कहानी सच्ची हो सकती है और कौन सी बनी हुई यह तो तुम इनको पढ़ कर अपने आप ही निश्चय करो।

अकबर बीरबल की मुलाकात–1

तो बच्चों अकबर तो थे एक राजा। उनको शिकार का बहुत शौक था। कई बार वह अपनी पढ़ाई के समय की चोरी करके भी शिकार के लिए निकल जाया करते थे। शायद इसलिये भी वह पढ़ नहीं सके। पर बाद में वे अपने सब दरबारियों से भी अच्छे घुड़सवार और शिकारी बन गये।

सो एक दिन अकबर अपने दरबारियों के साथ शिकार खेलने गये। वे और उनके कुछ दरबारी शिकार की खोज में आगे निकल गये और बाकी लोग पीछे ही रह गये। कुछ उनके साथ भी थे।

धीरे धीरे शाम हो गयी और राजा को भूख भी लग आयी और प्यास भी। तभी उनको लगा कि वे जंगल में बहुत दूर निकल आये हैं और रास्ता भटक गये हैं। उनको पता ही नहीं था कि वे किधर जायें।

आखिरकार वे एक ऐसी जगह निकल आये जहॉ तीन सड़कें मिलती थीं। राजा सड़कें देख कर बहुत खुश हुए कि वह अब इन में से किसी एक सड़क को पकड़ कर अपनी राजधानी आगरा जा सकते थे पर राजधानी जाने के लिये वे कौन सी सड़क पकड़ें यह उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

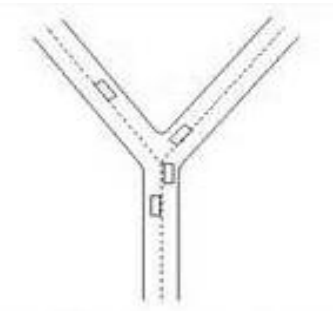

सब लोग अभी इस विषय में सोच ही रहे थे कि कौन सी सड़क आगरा जाती होगी कि इतने में उनको एक लड़का आता दिखायी दिया।

उस लड़के को देख कर सबकी जान में जान आयी कि शायद यह लड़का उनको रास्ता बताने में उनकी मदद करेगा। उस लड़के को बुलाया गया।

राजा ने उस लड़के से पूछा — "ओ लड़के, इनमें से कौन सी सड़क आगरा जाती है?"

लड़का हॅसा और बोला — "हुजूर, यह तो सभी जानते हैं कि सड़क अपने आप कहीं नहीं जा सकती सो इनमें से कोई भी सड़क आगरा या कहीं और कैसे जा सकती है?"

कह कर वह अपने मजाक पर अपने आप ही हॅस दिया। सभी लोग चुपचाप खड़े रह गये कोई कुछ नहीं बोला।

वह लड़का फिर बोला — "हुजूर, सड़कों पर केवल आदमी लोग आते जाते हैं सड़कें अपने आप कहीं नहीं जातीं।"

अबकी बार हॅसने की बारी अकबर की थी। वह हॅस कर बोले — "तुम ठीक कहते हो शायद। तुम्हारा नाम क्या है?"

लड़का बोला — "महेश दास।"

उसने राजा से पूछा — "हुजूर आप कौन हैं और आपका नाम क्या है?"

बादशाह ने अपनी ऑगूठी उतारी और उस लड़के को देते हुए कहा — "लड़के, तुम बादशाह अकबर से बात कर रहे हो जो हिन्दुस्तान का बादशाह है। हमको तुम्हारे जैसे निडर आदमी की ही जरूरत है।

जब तुम बड़े हो जाओ तो तुम हमारे दरबार में आना और यह ऑगूठी साथ में लाना। इस ऑगूठी से हम तुम्हें तुरन्त ही पहचान लेंगे। अब तुम हमको आगरा जाने का रास्ता बता दो ताकि हम जल्दी ही अपने घर पहुॅच सकें।"

महेश दास ने आदर के साथ झुक कर बादशाह को आगरा जाने वाली सड़क बता दी और बादशाह और उसके आदमी उस सड़क पर आगरा की ओर चल दिये।

तो यह थी बादशाह अकबर की बीरबल से पहली मुलाकात। दूसरी कहानी है कि महेश दास बीरबल कैसे बना□

महेश दास बीरबल बना

महेश दास अब बड़ा हो गया था। उसको अब एक नौकरी चाहिये थी ताकि वह अपने परिवार का पालन पोषण कर सके। इस समय उसको बादशाह अकबर की दी हुई अॅगूठी याद आयी।

उसने अपने पास जमा किये हुए पैसे उठाये और वह अॅगूठी ली जो उसे बादशाह अकबर ने दी थी और उनको ले कर वह भारत की नयी राजधानी फतेहपुर सीकरी चल दिया।

महेश दास जब फतेहपुर सीकरी पहुॅचा तो उसकी शानो शौकत देख कर उसका मन बहुत खुश हो गया। वह भीड़ को छोड़ कर महल की लाल दीवारों की ओर बढ़ गया।

महल का दरवाजा बहुत सजा हुआ था। उसने इससे पहले इतना सुन्दर दरवाजा पहले कभी नहीं देखा था। महेश दास दरवाजे के अन्दर घुसना चाहता था पर वहॉ के चौकीदारों ने उसको अपने भाले हवा में लहरा कर वहीं रोक दिया।

उन्होंने उससे पूछा — "कहॉ जा रहे हो?"

महेश दास नम्रता पूर्वक बोला — "मेरा नाम महेश दास है और मैं बादशाह सलामत से मिलना चाहता हूॅ।"

चौकीदारों ने उसका मजाक बनाते हुए कहा — "हॉ, जैसे बादशाह सलामत तो तुम्हारा इन्तजार ही कर रहे हैं कि महेश दास जी कब आयें और मैं कब उनसे मिलूॅ।"

महेश दास फिर नम्रता पूर्वक बोला — "जी जनाब, कुछ ऐसा ही समझ लीजिये। और इसीलिये तो मैं यहॉ हूॅ। मुझे विश्वास है कि आप लोग बादशाह की लड़ाई में बहुत वीरता से लड़े होंगे पर यहॉ मुझ से पंगा लेने की कोशिश मत करना वरना हार जाओगे।"

यह सुन कर चौकीदार पहले तो कुछ घबरा गया और दो पल चुप रहा फिर हिम्मत करके बोला — "तुमको ऐसा कैसे लगता है कि मैं तुमसे हार जाऊॅगा? यदि तुमने अपनी ये बेकार की बातें बन्द नहीं कीं तो मैं अभी अभी तुम्हारा सिर काट सकता हूॅ।"

पर महेश दास तो हार मानने वाला था नहीं, सो उसने बादशाह की दी हुई अॅगूठी उनको दिखायी। अब वहॉ ऐसा कौन सा आदमी था जो बादशाह की अॅगूठी नहीं पहचानता?

वह अॅगूठी देख कर चौकीदार बेचारा चुप रह गया। उसकी महेश दास को अन्दर भेजने की इच्छा तो नहीं थी पर वह क्या करता। काफी सोचने के बाद उसने महेश दास को एक शर्त के साथ अन्दर जाने दिया।

वह बोला — "तुम अन्दर जा सकते हो पर एक शर्त पर।"

"वह क्या?"

चौकीदार बोला — "जो भी तुमको बादशाह से मिलेगा उसमें से आधा तुम मुझे दोगे।"

महेश दास मुस्कुराया और बोला — "ठीक है।" और वह अन्दर चला गया।

वह अन्दर चलता गया, चलता गया और आखिर एक बहुत सुन्दर सोने के सिंहासन के सामने पहुँच गया जिसके ऊपर एक शाही आदमी बैठा हुआ था। उसने बादशाह अकबर को तुरन्त ही पहचान लिया।

पास में खड़े हर आदमी को पीछे धक्का देते हुए वह आगे की ओर बढ़ता चला गया और जमीन पर लेट कर बादशाह को सलाम किया और बोला — "ओ पूर्णमासी के चॉद, आपका साया रोज रोज बढ़ता रहे।"

अकबर उसको देख कर मुस्कुराया और बोला — "तुमको क्या चाहिये नौजवान? तुम्हारे मन की क्या मुराद है? हमें बताओ हम उसको पूरी करने की पूरी कोशिश करेंगे।"

महेश दास उठ कर खड़ा होता हुआ बोला — "हुजूर, मैं आपके बुलाने पर यहॉ आया हूँ।" और उसने वह अँगूठी बादशाह सलामत को दे दी जो बादशाह ने उसको कुछ साल पहले दी थी।

बादशाह ने उस अँगूठी को पहचानते हुए कहा — "बोलो तुम्हें क्या चाहिये?"

महेश दास को चौकीदार से किया गया अपना वायदा याद आया तो वह बोला — "जहॉपनाह, मुझे **100** कोड़े मारे जायें।"

बादशाह को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ, वह बोले — "पर तुमने तो कोई जुर्म नहीं किया है फिर हम तुमको **100** कोड़े क्यों मारें?"

महेश दास नम्रता पूर्वक बोला — "सरकार, अब आप अपने वायदे से मत मुकरिये कि आप मेरे मन की इच्छा पूरी करेंगे।"

अकबर अभी भी परेशान था। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि महेश दास ने ऐसी अजीब इच्छा क्यों जाहिर की फिर भी अपने वायदे के अनुसार और महेश दास की इच्छा को ध्यान में रखते हुए उसने महेश दास को **100** कोड़े मारने का हुकुम दे दिया।

और इससे ज्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि महेश दास ने हर कोड़े को चुपचाप सह लिया।

जब महेश दास **50** कोड़े खा चुका तो चिल्लाया — 'रुकिये।"

अकबर ने पूछा — "क्या हुआ?"

महेश बोला — "मैं जब यहॉ आ रहा था तो आपके चौकीदार ने मुझे आपके महल में आने ही नहीं दिया जब तक कि उसने मुझ से यह वायदा नहीं करा लिया कि मुझे जो कुछ भी आपसे मिलेगा मैं उसे उसके साथ आधा आधा नहीं बॉटूँगा।

तो मैंने अपने हिस्से का आधा इनाम तो ले लिया अब बचे हुए आधे हिस्से को लेने की आपके चौकीदार की बारी है।" यह सुन कर वहॉ जितने भी लोग मौजूद थे सब हॅस पड़े।

बाहर से चौकीदार को बुलाया गया और उसे इस प्रकार की रिश्वत लेने पर डॉटा गया और फिर उसको **50** कोड़े मारे गये।

अकबर ने महेश दास से कहा — "तुम अभी भी उतने ही बहादुर हो जितने तुम बचपन में थे। बल्कि तुम अब पहले से भी ज़्यादा होशियार हो गये हो।

हम अपने दरबार से रिश्वतखोरों को निकालने के बारे में ही सोच रहे थे कि उनको कैसे निकालें कि तुम आ गये। लेकिन तुमने तो अपनी छोटी सी चाल से वह कर दिखाया जो हम कई कानून बना कर भी नहीं कर सकते थे। आज से अपनी अक्लमन्दी की वजह से तुम बीरबल कहलाओगे और तुम हमारे सलाहकार बन कर रहोगे।"

इस प्रकार महेश दास बीरबल बन गया और उस दिन बीरबल पैदा हुआ। उसी दिन से राजा अकबर ने बीरबल को अपना सलाहकार बना लिया और उसको अपने साथ रखने लगे।

एक सेर चूना[1]

बीरबल के बादशाह अकबर से मिलने की एक और कहानी।

जब बादशाह अकबर ने भारत पर राज करना शुरू किया तो उनकी राजधानी पुराना ऐतिहासिक मशहूर शहर आगरा थी। शाही परिवार और दरबारी सब आगरा के किले के अन्दर ही रहते थे।

किले के पीछे तंग गलियों का एक जाल बिछा हुआ था जहॉ जनता रहती थी। इन गलियों में से एक गली में एक पान की दूकान थी। यह दूकान इसमाइल नाम के आदमी की थी। उसकी दूकान तो छोटी सी थी पर उसका पान बहुत अच्छा बनता था।

इसमाइल पान के साथ साथ कई खुशबुओं में शरबत भी बेचता था जैसे केवड़ा गुलाब चन्दन आदि। उसकी दूकान के आगे बान की एक खाट[2] हमेशा ही पड़ी रहती थी ताकि वहॉ लोग आराम से बैठ कर पान खा सकें और शरबत पी सकें।

एक दिन इसमाइल की दूकान पर एक अजनबी आया। उस दिन दिन बहुत गरम था और वह अजनबी बहुत थका थका लग रहा था। यह देख कर इसमाइल ने उसको एक गिलास ठंडा पानी दिया और उससे पूछा कि क्या वह शहर में रहता था।

---

[1] A Seer of Lime – an Akbar Birbal tale. Taken from the Web Site : http://www.indianetzone.com/30/a_seer_lime_indian_folktale.htm

[2] A cot woven with strings – see its picture above.

अजनबी ने ना में सिर हिला कर बताया कि वह शहर में नहीं रहता था। वह वहॉ एक अजनबी था और एक सराय में ठहरा हुआ था जो इसमाइल की दूकान से दो गली दूर थी।

यह सुन कर इसमाइल ने उसके वहॉ आने की वजह पूछी। वह अजनबी उसकी दूकान के सामने पड़ी बान की खाट पर बैठ गया और बोला कि वह वहॉ इस उम्मीद से आया था कि बादशाह उसको अपना दरबारी बना लेंगे।

इसमाइल को यह सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ पर फिर बोला कि ऐसे वहॉ बहुत कम लोग थे जिनको यह इज़्ज़त मिलती थी। पर वह अजनबी फिर भी अपनी किस्मत आजमाना चाहता था।

वह अजनबी इसमाइल की दूकान पर रोज आता, बान की चारपाई पर बैठता, कुछ देर बात करता और फिर चला जाता। वह बहुत जगह घूमा फिरा था, बहुत अक्लमन्द था और बात करने में बहुत चतुर था।

पर देखने में वह हमेशा ही कुछ बेचैन सा लगता था जिसके पास करने के लिये तो कुछ था नहीं सिवाय उस दिन के इन्तजार के जिस दिन उसको बादशाह के दरबार में एक दरबारी की जगह मिल जाने वाली थी।

एक दिन वह अजनबी रोज की तरह वहॉ आया और इसमाइल से एक गिलास शरबत मॉगा और उसकी दूकान के सामने पड़ी खाट पर बैठ गया।

इसमाइल ने उसे शरबत दिया तो उसने उसमें से मुश्किल से एक दो घूँट शरबत ही पिया होगा कि एक आदमी उस गली में दौड़ता हुआ वहॉ आया और एकदम से इसमाइल की दूकान के आगे आ कर रुक गया।

वह बहुत ज़ोर से हॉफ रहा था और बहुत जल्दी में लग रहा था। उसने इसमाइल से तुरन्त ही उसको एक सेर चूना देने के लिये कहा। उसकी यह अजीब सी मॉग सुन कर इसमाइल बहुत ज़ोर से हॅस पड़ा और उससे बोला कि वह कुछ धीरज तो रखे।

पर वह आदमी तो बहुत ही जल्दी में था क्योंकि वह एक सेर चूना तो बादशाह अकबर ने उससे खुद ने मॅगवाया था।

इस सारे समय वह अजनबी कभी इसके मुँह की तरफ कभी उसके मुँह की तरफ देखता रहा। उसके चेहरे पर उत्सुकता छायी हुई थी। अब वह खड़ा हुआ और अधिकारपूर्ण शब्दों में बोला — "पर तुम्हारे बादशाह को एक सेर चूना क्यों चाहिये।"

फिर उसने उससे यह भी पूछा कि क्या वह बादशाह के लिये काम करता था। उस आदमी ने बड़े घमंड से जवाब दिया कि "हॉ मैं बादशाह के लिये काम करता हूँ।

मैं बादशाह के हर खाने के बाद के लिये पान बनाया करता हूँ। पान बना कर उसको सोने के वर्क में लपेटा करता हूँ और उसको सोने की एक प्लेट में उनको दिया करता हूँ।"

आज भी जब बादशाह का दोपहर का खाना खत्म हो गया तो उन्होंने पान खाया पर अगले ही पल वह घूमे और उन्होंने मुझसे एक सेर चूना लाने के लिये कहा।"

अब अजनबी ने पूछा — "जब बादशाह ने तुमसे यह लाने के लिये कहा तो क्या वह गुस्सा थे।"

क्योंकि नौकर लोगों को बादशाह के चेहरे की तरफ देखने की इजाज़त नहीं थी सो वह यह नहीं बता सका कि यह कहते समय वह गुस्सा थे या नहीं सो वह बोला "पता नहीं।"

अजनबी ने तब उस आदमी से कहा कि अगर उसको अपनी जान बचानी है तो उसको एक सेर चूने की बजाय हलवाई की दूकान से एक सेर दही खरीद कर ले जाना चाहिये और तुरन्त ही बादशाह के पास पहुँचना चाहिये।

उस आदमी ने ऐसा ही किया। उसने तुरन्त ही एक हलवाई की दूकान से एक सेर दही खरीदा और किले की तरफ भाग गया। बादशाह ने उस आदमी पर एक निगाह डाली और उससे पूछा कि क्या वह एक सेर चूना लाया।

आदमी डर कर बोला "जी हुजूर।"

बादशाह बोले "तो बैठ जाओ और खाओ इसे।" और यह कह कर वह दरबार चले गये। आदमी ने अपना दही वाला मिट्टी का बरतन उठाया और खुशी खुशी उसमें से सारा दही पी गया।

अगली सुबह वह आदमी काम पर फिर से वापस आ गया था। जैसे ही बादशाह ने उसको देखा तो उनका चेहरा तो उसको देख कर गुस्से से लाल हो गया।

उन्होंने उससे तुरन्त ही पूछा कि क्या कल उसने वह एक सेर चूना सारा खा लिया था। यह सुन कर तो वह बादशाह के कदमों पर गिर पड़ा और उनको सारी कहानी कह सुनायी।

बिना वक्त बरबाद किये बादशाह ने उस आदमी को इसमाइल की दूकान से बुला भेजा। एक घंटे से कम में वह अजनबी बादशाह के सामने शाही दरबार में खड़ा था।

वह बड़े मुगल बादशाह हिन्दुस्तान की गद्दी पर बैठे हुए थे। वह अपने रेशमी कपड़ों और जवाहरात जड़ा ताज पहने शाही लग रहे थे। उनकी आवाज भी हुकुम देने वाली और कड़क थी। पर अजनबी उनके सामने बड़े आराम से खड़ा था।

बादशाह ने उस अजनबी से पूछा कि उसने उस आदमी को एक सेर चूने की बजाय एक सेर दही ले जाने की सलाह क्यों दी।

अजनबी ने अपना सिर झुकाया और बोला कि उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि एक आदमी एक सेर चूना ले कर जा रहा था।

उसने उस आदमी से वे हालात पूछे जिनमें उसको एक सेर चूना लाने के लिये कहा गया था। उस आदमी से सारी कहानी सुनने के बाद उसको लगा कि उस आदमी ने शायद आपके पान में ज़्यादा

चूना लगा दिया होगा और आपकी शाही जबान कट गयी होगी। तो सजा के तौर पर आपने उससे एक सेर चूना मॅगवाया ताकि आप उसको उसे खिला कर सजा दे सकें।

सो उसकी जान बचाने के लिये मैंने उसको सलाह दी कि वह एक सेर चूने की बजाय एक सेर दही ले जाये।"

अकबर अजनबी की सूझबूझ से तो बहुत प्रभावित हुए पर जो कुछ उसने किया उससे वह बहुत गुस्सा थे।

इस बारे में पूछने पर अजनबी ने फिर अपना सिर झुकाया और उनसे माफी मॉगी कि ऐसा करके वह तो बस एक सीधे सादे आदमी की ज़िन्दगी बचाना चाहता था। इसके अलावा वह एक बादशाह को थोड़े से गुस्से में किसी भोले भाले आदमी की ज़िन्दगी लेने के पाप से बचाना चाहता था।

बादशाह उसका यह जवाब सुन कर भी बहुत खुश हुए। उन्होंने उसका नाम पूछा तो अजनबी ने जवाब दिया "बीरबल"।

बादशाह अकबर तो बहुत ही खुश हो गये और उस अजनबी को जो अब अजनबी नहीं था बीरबल था अपने दरबारियों में शामिल कर लिया और वहॉ उसको एक इज़्ज़त की जगह दी।

यह सुन कर बीरबल भी बहुत खुश हो गये उन्होंने भी बादशाह को जमीन तक झुक कर बन्दगी की। इस तरह बीरबल अकबर बादशाह के दरबार में घुसे।

अकबर बीरबल की
कुछ लोकप्रिय और रोचक कहानियॉ

1 सवाल पर सवाल

एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा — "बीरबल, क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारी पत्नी के हाथ में कितनी चूड़ियॉ हैं?"

बीरबल अकबर के इस ऊटपटॉग सवाल से कुछ चौंक से गये पर फिर सादगी से बोले — "नहीं हुजूर, मैं नहीं बता सकता।"

अकबर बोले — "अरे, तुम रोज तो उसका हाथ देखते हो फिर भी नहीं बता सकते कि उसके हाथ में कितनी चूड़ियॉ हैं? बड़े कमाल की बात है।"

बीरबल को अकबर की यह बात कुछ जमी नहीं सो वह कुछ पल तो सोचते रहे, फिर बोले — "आइये, बगीचे में चलते हैं मैं वहॉ आपको बताऊॅगा कि ऐसा कैसे हुआ।"

पहले तो बादशाह अकबर की समझ में नहीं आया कि बागीचे से इसका क्या सम्बन्ध है पर वह क्योंकि बीरबल से ज़्यादा बहस नहीं किया करते थे सो वे दोनों शाही बगीचे में आ पहुॅचे।

बागीचे में जाने के लिये कुछ सीढ़ियॉ उतरनी पड़तीं थीं सो वे सीढ़ियॉ उतर कर बगीचे में आ गये।

कुछ देर बाद घूमते घूमते बीरबल ने पूछा — "जहॉपनाह, अभी जो हम बागीचे की सीढ़ियॉ उतर कर आये वे कितनी थीं?"

अकबर यह सुन कर चौंक गये पर फिर अपना सवाल याद कर के चुप रह गये।

बीरबल नरमी से बोले — "बादशाह सलामत, आप भी तो ये सीढ़ियॉ रोज उतरते चढ़ते हैं और आपको भी यह याद नहीं कि ये सीढ़ियॉ कितनी हैं। बस ऐसे ही कुछ समझ लीजिये।"

2 गधा कौन□

एक बार बादशाह अकबर अपने दो बेटों और बीरबल के साथ नदी की ओर गये। नदी के किनारे पहुॅच कर बादशाह और उनके दोनों बेटों की इच्छा नदी में नहाने की हुई सो तीनों ने अपने अपने कपड़े उतारे और बीरबल को थमा दिये और खुद नदी में नहाने चले गये।

बीरबल उनके कपड़े अपने कन्धे पर रखे उनके नदी से बाहर निकलने का इन्तज़ार करते रहे। अकबर ने जब बीरबल को इस प्रकार कपड़े कन्धे पर रखे देखा तो उनको मजाक सूझा।

अकबर ने बीरबल से कहा — "बीरबल, तुमको देख कर ऐसा लग रहा है मानो तुम्हारे ऊपर दो गधे का बोझ लदा हो।"

सो बच्चों बीरबल हाजिर जवाब तो थे ही, तुरन्त बोले — "धोबी का गधा तो केवल एक ही गधे का बोझ उठाता है यहॉ तो मैं तीन गधों का बोझ लादे खड़ा हूॅ।"

3 ऊँट की गर्दन टेढ़ी क्यों□

बादशाह अकबर बीरबल की हाजिर जवाबी से बहुत खुश थे सो एक दिन उन्होंने बीरबल से वायदा किया कि वह उनको बहुत सारी भेंट देंगे।

पर कई दिन गुजर गये और बादशाह की भेंट का कोई अता पता ही नहीं था। बीरबल बादशाह की इस बात से बहुत नाखुश थे पर उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह अपनी भेंट लेने के लिये क्या करें।

एक दिन बादशाह अकबर बीरबल के साथ यमुना नदी के किनारे टहल रहे थे कि उनको एक ऊँट दिखायी दिया। कुछ देर तक तो बादशाह उस ऊँट को देखते रहे फिर बीरबल से बोले — "बीरबल, यह तो बताओ कि ऊँट की गरदन टेढ़ी क्यों है?"

बीरबल ने सोचा यही समय ठीक है बादशाह को उनका वायदा याद दिलाने की, सो वह कुछ पल सोच कर बोले — "हुजूर, ऐसा लगता है कि ऊँट ने कभी किसी से कोई वायदा किया है और उसे भूल गया है इसी वजह से उसकी गरदान टेढ़ी है।

हमारे धर्म की किताबों में लिखा है कि यदि कोई किसी से कोई वायदा करके भूल जाये तो उसकी गरदन टेढ़ी हो जायेगी। इसलिये

ऊँट की गरदन टेढ़ी होने की मुझे तो यही एक वजह दिखायी देती है।"

यह सुन कर अकबर को बीरबल से किया हुआ अपना वायदा याद आ गया और यह भी याद आ गया कि उन्होंने अपने वायदे के अनुसार बीरबल को अभी वे भेंटें नहीं दी हैं।

महल में पहुँच कर बादशाह ने तुरन्त ही बीरबल को भेंटें दे दी। तो बच्चों, ऐसे मॉगीं बीरबल ने अपनी भेंटें।

4 बीरबल ने एक पहेली सुलझायी

बहुत सारे दरबारी बीरबल से जला करते थे क्योंकि बीरबल बादशाह के दाहिने हाथ थे और बादशाह उनसे बहुत प्रसन्न थे।

सो एक दिन कुछ दरबारी बीरबल के दरबार में आने से पहले बादशाह के पास आये और बोले — "महाराज, हम आपके शाही सलाहकार बनना चाहते हैं।"

बादशाह को इसमें कोई चाल नजर नहीं आई सो उन्होंने सीधे स्वभाव कहा — "हॉ हॉ क्यों नहीं। परन्तु तुम्हें हमारा सलाहकार बनने के लिये एक इम्तिहान पास करना होगा और जो कोई भी वह इम्तिहान पास कर लेगा वही हमारा शाही सलाहकार बनेगा।"

उन दरबारियों के पास इस शर्त पर राजी होने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो वे राजी हो गये।

अब बच्चों अकबर ने क्या किया कि उन्होंने अपनी कमर का कपड़ा खोल दिया और नीचे फर्श पर लेट गये और उन सब दरबारियों से कहा कि वे उनको उस कपड़े से सिर से पॉव तक ढक दें।

हर दरबारी ने जो शाही सलाहकार बनना चाहता था अपनी पूरी कोशिश कर ली कि वह बादशाह को उस कपड़े से सिर से पॉव तक पूरा पूरा ढक दे परन्तु बादशाह का शरीर कभी तो सिर की ओर से खुला रह जाता और कभी पॉव की ओर से।

यह देख कर सभी दरबारी बहुत परेशान हुए। उन्होंने अपनी पूरी अक्ल लड़ा ली मगर वे राजा को सिर से पॉव तक उस कपड़े से ढकने में कामयाब नहीं हो सके। वे सब अपना सा मुँह ले कर एक ओर को बैठ गये।

इतने में बीरबल दरबार में आ गये। बीरबल को देख कर बादशाह अकबर बहुत खुश हुए। बीरबल ने पूछा — "यह सब क्या हो रहा है जहॉपनाह?"

अकबर ने बीरबल से भी यही काम करने के लिये कहा। बीरबल ने कुछ पल सोचा और फिर राजा से बड़ी नरमी से कहा — "हुजूर, आप ज़रा अपने घुटने ऊपर की ओर सिकोड़ लें।"

जैसे ही राजा ने अपने घुटने थोड़े से ऊपर की ओर सिकोड़े बीरबल ने उस कपड़े से राजा को पूरा ढक दिया।

वे दरबारी जो शाही सलाहकार बनने के लिये आये थे वे सब शरमिन्दा हो कर अपनी अपनी जगह पर बैठ गये और फिर उन्होंने कभी शाही सलाहकार बनने का नाम भी नहीं लिया।

तो बच्चों ऐसा था बीरबल का दिमाग।

5 अकबर के लिये फूल

एक दिन अकबर अपने शाही बगीचे में घूम रहे थे। उनके साथ बीरबल और उनके कुछ दरबारी भी थे। फूलों का मौसम था सो बगीचे में बहुर सारे फूल खिले हुए थे।

एक कवि ने एक सुन्दर फूल की इशारा करते हुए बादशाह से कहा — "देखिए जहॉपनाह, यह फूल कितना सुन्दर है। कोई भी आदमी इतनी सुन्दर चीज़ नहीं बना सकता।"

यह सुन कर बीरबल बोले — "मैं यह नहीं मानता। कई बार आदमी इससे ज़्यादा सुन्दर चीज़ें बना सकता है।"

अकबर बीरबल की बात काटते हुए बोले — "बीरबल, तुम बेकार की बात कर रहे हो। यह फूल तो वास्तव में बहुत ही सुन्दर है। कोई आदमी इन फूलों से सुन्दर फूल कैसे बना सकता है?"

बीरबल बेचारे चुप हो गये पर वह उस बात को भूले नहीं।

कुछ दिनों के बाद बीरबल ने आगरा के एक बहुत ही बढ़िया कारीगर को पेश किया। उसने बादशाह को संगमरमर का बना एक बहुत ही सुन्दर गुलदस्ता पेश किया।

अकबर उस गुलदस्ते को देखते ही रह गये। वह गुलदस्ता तो वाकई बहुत ही सुन्दर था। अकबर ने उस कारीगर को खुश हो कर **1000** सोने के सिक्के इनाम में दिये।

ठीक उसी समय दरबार में एक लड़का आया और बादशाह को ताजे फूलों का एक गुलदस्ता भेंट किया। बादशाह उस गुलदस्ते को देख कर भी बहुत खुश हुए और उन्होंने उस लड़के को चॉदी का एक सिक्का दिया।

बीरबल बोले — "तो आपको संगमरमर का गुलदस्ता असली फूलों के गुलदस्ते से अधिक सुन्दर लगा?"

अकबर समझ गये कि बीरबल ऐसा क्यों कह रहे हैं।

6 बीरबल का मीठा जवाब

अकबर अपने दरबारियों से अक्सर बहुत सारे सवाल पूछा करते थे। एक दिन जब वह शाही दरबार में पधारे और अपनी कुरसी पर बैठ गये तो उन्होंने दरबारियों से पूछा — "उस आदमी को क्या सजा दी जाये जिसने मेरी मूँछें खींचीं हों?"

अब बच्चों बादशाह की मूँछें खींचना कोई आसान काम तो है नहीं कि कोई भी आये और आ कर उनकी मूँछें खींच ले। इसलिये जिसने भी बादशाह की मूँछें खींची हैं उसको सजा तो मिलनी ही चाहिये और वह भी कड़ी से कड़ी।

सो किसी ने कहा "उसका सिर कटवा देना चाहिये।"

तो दूसरा बोला "उसको फॉसी पर लटका देना चाहिये।"

एक और बोला "हुजूर उसको तो कोड़े मारने चाहिये।"

बादशाह इन सब सजाओं को सुन कर खुश नहीं थे सो उन्होंने बीरबल से पूछा। राजा बीरबल पर बहुत विश्वास करते थे।

बीरबल एक मिनट तो चुप रहे फिर धीरे से मुस्कुरा कर बोले — "जहॉपनाह, उसको तो मिठाई देनी चाहिये।"

अकबर और सारे दरबारी बीरबल के इस जवाब पर हक्का बक्का रह गये कि कहॉ तो हम सजा की बात कर रहे थे और कहॉ

बीरबल उस आदमी को मिठाई देने की बात कर रहे हैं। बच्चों तुम भी तो हक्का बक्का रह गये होगे न यह जवाब सुन कर।

बादशाह बोले — "बीरबल, यह तुम क्या कह रहे हो? जो हमारी मूँछें खींचे हम उसको मिठाई दें? कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये हो? तुम जानते हो तुम क्या कह रहे हो?"

बीरबल बड़ी नम्रता से मुस्कुरा कर बोले — "जहॉपनाह, मैं बिल्कुल भी पागल नहीं हूँ और मैं बिल्कुल ठीक कह रहा हूँ।"

बादशाह बोले — "तो फिर तुम ऐसा जवाब कैसे दे सकते हो?"

बीरबल फिर नम्रता से बोले — "क्योंकि जहॉपनाह, केवल एक ही आदमी है जो आपकी मूँछें खींचने की जुर्रत कर सकता है और वह है आपका पोता।"

बीरबल का यह जवाब सुन कर बादशाह इतना अधिक खुश हुए कि उन्होंने तुरन्त अपनी एक अँगूठी निकाल कर बीरबल को दे दी।

7 बीरबल ने मेहमान को पहचाना

तो बच्चों एक बार क्या हुआ कि एक धनी आदमी ने बीरबल को अपने घर दावत पर बुलाया। बताये हुए समय पर बीरबल उसके घर दावत खाने जा पहुँचे।

पहुँच कर उन्होंने वहॉ क्या देखा कि वहॉ तो बड़ी भीड़ जमा है। उस धनी आदमी ने बीरबल का बड़े प्यार से स्वागत किया और उनको अन्दर ले गया।

बीरबल इतनी बड़ी भीड़ को देख कर कुछ सकुचा से गये। वह बोले — "मुझे नहीं मालूम था कि आपके यहॉ इस दावत में इतने सारे मेहमान होंगे।"

वह धनी व्यक्ति नम्रता से बोला — "जनाब, यहॉ मेहमान तो केवल एक ही है, बाकी तो सारे मेरे नौकर चाकर हैं। हॉ आप मेरे दूसरे मेहमान हैं। क्या आप बता सकते हैं कि आपके अलावा यहॉ वह दूसरा मेहमान कौन है?"

अब बच्चों इतनी बड़ी भीड़ में मेहमान को पहचानना कोई आसान काम तो था नहीं फिर भी बीरबल बोले — "हो सकता है कि मैं उस मेहमान को पहचान लूँ। आप ऐसा करें कि कोई चुटकुला सुनायें तो शायद मैं पहचान जाऊँ।"

उस धनी आदमी की तो कुछ समझ में नहीं आया कि एक चुटकुला मेहमान को पहचानने में कैसे सहायता कर सकता है पर फिर भी वह बीरबल के कहने पर एक चुटकुला सुनाने पर राजी हो गया।

उस धनी आदमी ने एक बहुत ही अच्छा चुटकुला सुनाया। उस चुटकुले को सुन कर सभी ठहाका मार कर हॅस पड़े परन्तु बीरबल ने इतना बेकार का चुटकुला अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं सुना था सो वह नहीं हॅस सका।

उस धनी आदमी ने अब बीरबल से कहा — "आपके कहे अनुसार मैंने चुटकुला सुना दिया अब आप बताइये कि वह दूसरा मेहमान कौन है?"

बीरबल ने एक आदमी की ओर इशारा किया और कहा — "आपका दूसरा मेहमान वह है।"

यह सुन कर तो वह धनी आदमी और भी अधिक आश्चर्य में पड़ गया और बोला — "आपने बिल्कुल ठीक पहचाना पर आपने उस आदमी को इतनी भीड़ में पहचाना कैसे?"

बीरबल बोले — "अरे यह तो बड़ी आसान सी बात थी क्योंकि ऐसे चुटकुले पर केवल मालिक के नौकर ही हॅस सकते हैं इसलिये मैंने उस दूसरे मेहमान को तुरन्त ही पहचान लिया।"

8 थोड़ी कम थोड़ी ज्यादा

बच्चों एक बार बीरबल की **5** साल की बेटी भी उनके साथ शाही दरबार में गयी। जब बादशाह अकबर ने उसको देखा तो अचानक उनके दिमाग में यह ख़याल आया कि क्यों न वह बीरबल की बेटी की हाजिर जवाबी और करारे जवाबों का इम्तिहान ले कि वह भी अपने पिता की तरह से होशियार है कि नहीं।

सो उन्होंने उससे बात करनी शुरू की। बादशाह ने उससे पूछा — "बिटिया, क्या तुमको फारसी भाषा आती है?"

लड़की बोली — "हुजूर, थोड़ी कम थोड़ी ज़्यादा।"

बादशाह उसके इस जवाब का मतलब नहीं समझे सो उन्होंने बीरबल से पूछा कि उस बच्ची के जवाब का क्या मतलब था।

बीरबल बोले — "हुजूर यह कह रही है कि यह फारसी उन लोगों से ज़्यादा जानती है जो फारसी बिल्कुल नहीं जानते और उन लोगों से थोड़ा कम जानती है जो फारसी अच्छी तरह जानते हैं।

अकबर समझ गये कि बीरबल की बेटी भी बीरबल की तरह हाजिर जवाब और तेज़ निकलेगी।

9 बीरबल का खूबसूरत जवाब

एक बार की बात है कि बादशाह अकबर ने एक औरत को बड़े काले से, बदसूरत से और भोंडे से बच्चे को प्यार करते, छाती से लगाते और चूमते हुए देखा।

यह सब देख कर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ कि कोई औरत किसी ऐसे बच्चे को कैसे प्यार कर सकती है।

जब उनकी समझ में कुछ न आया तो जब वह अगले दिन राज दरबार में आये तो उन्होंने सारा किस्सा बीरबल को सुनाया और पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है?

बीरबल बोले — "हुजूर, वह उसका अपना बच्चा रहा होगा क्योंकि हर मॉ के लिये उसका अपना बच्चा ही दुनियॉ भर में सबसे सुन्दर होता है।"

बादशाह के चेहरे से बीरबल ने तुरन्त ही जान लिया कि बादशाह उनके जवाब से कुछ ज़्यादा खुश नहीं हुए सो उन्होंने बादशाह के सामने ही एक दरबान को बुलाया और उसको आज्ञा दी कि वह अगले दिन दुनियॉ का सबसे खूबसूरत बच्चा राज दरबार में पेश करे।

अगले दिन वह दरबान एक बहुत ही बदसूरत, भोंडे, दॉत आगे को निकले हुए, खड़े बाल वाले बच्चे को ले कर राज दरबार में

हाजिर हुआ और उसे बादशाह के सामने खड़ा करके बोला — "हुजूर यही संसार का सबसे खूबसूरत बच्चा है।"

बादशाह ने पूछा — "तुम यह बात पूरे यकीन के साथ कैसे कह सकते हो कि यही संसार का सबसे खूबसूरत बच्चा है?"

दरबान सिर झुका कर बोला — "जहॉपनाह, यहॉ से जाने के बाद जब मैं घर पहुँचा तो मैंने अपनी समस्या अपनी पत्नी को बतायी तो उसने कहा कि इसमें तो कोई समस्या ही नहीं है।

संसार में हमारे बेटे से खूबसूरत तो और कोई और बच्चा है ही नहीं। और उसने मुझे हमारे बेटे को यहॉ लाने की राय दी।"

10 सबसे अधिक कुलीन भिखारी

बच्चों क्या तुमने कभी कोई कुलीन भिखारी शब्द सुना है? नहीं सुना न? तो कोई बात नहीं लो आज सुनो।

एक दिन बादशाह अकबर ने बीरबल से पूछा — "बीरबल, क्या यह मुमकिन है कि कोई आदमी सबसे नीचा भी हो और सबसे अधिक भला भी हो?"

बीरबल बोले — "जी हॉ जहॉपनाह, बिलकुल मुमकिन है।"

बादशाह बोले — "तो उसे हमारे सामने पेश किया जाये।"

"जो हुकुम सरकार का।" कह कर बीरबल चले गये।

अगले दिन बीरबल एक भिखारी को ले कर लौटे और उसे बादशाह के सामने पेश किया और बोले — "हुजूर, यहॉ पर बैठे हुए लोगों में यह आदमी सबसे नीचा भी है और सबसे अधिक कुलीन भी।"

बादशाह अकबर उसे देख कर बोले — "यह तो सच हो सकता है बीरबल कि यह सबसे नीचा आदमी है पर इसका क्या सबूत है कि यह सबसे अधिक कुलीन भी है।"

बीरबल सिर झुका कर बोले — "जहॉपनाह, इसको बादशाह के सामने आने का मौका मिला क्या यही इसके सारे भिखारियों में सबसे अधिक कुलीन होने का सबूत नहीं है?" बादशाह बीरबल का यह जवाब सुन कर चुप हो गये।

11 वफादार माली

एक बार बादशाह अकबर अपने बागीचे में टहल रहे थे कि वह एक पत्थर से टकरा गये और गिर गये। एक तो बादशाह उस दिन पहले से ही कुछ दुखी से थे और ऊपर से उनका पत्थर से टकरा कर गिरना।

बादशाह को ज़ोर का गुस्सा आ गया और अगले ही दिन उन्होंने उस माली को गिरफ्तार करने और उसको फॉसी पर चढ़ाने का हुकुम जारी कर दिया।

अब जब माली को फॉसी की सजा दी जा रही थी तो उससे उसकी आखिरी इच्छा पूछी गयी। माली ने कहा कि वह मरने से पहले एक बार बादशाह के दर्शन करना चाहता था।

मरने वाले की आखिरी इच्छा तो पूरी की ही जाती है सो उसको बादशाह के सामने शाही दरबार में लाया गया। माली बादशाह के सिंहासन के पास पहुॅचा और उसने जोर से गला साफ करते हुए बादशाह के पैरों पर थूक दिया।

बादशाह को और भी अधिक गुस्सा आ गया और उन्होंने उससे पूछा कि उसने ऐसा क्यों किया?

क्योंकि माली ने यह सब बीरबल के कहने पर किया था इसलिये बीरबल उठे और बोले — "हुजूर, इस बदकिस्मत माली से अधिक वफादार आज और कोई भी आदमी नहीं है।"

बादशाह ने पूछा "क्यों?"

बीरबल बड़ी शान्ति से बोले — "इस बात से डरते हुए भी कि आपने उसको एक बहुत छोटी सी गलती के लिये फॉसी की सजा दी है, उसने आपके लिये एक ऐसी वाजिब वजह पैदा की जिसके लिये उसको फॉसी की सजा दी जा सकती है और इस तरह से उसने आपको बदनामी से बचा लिया।"

यह सुन कर बादशाह को अपनी गलती का एहसास हो गया और उनका गुस्सा काफूर की तरह उड़ गया।

उन्होंने उसकी फॉसी की सजा रद्द कर दी और उसको कुछ सोने की मुहरें दे कर रिहा कर दिया।

12 बीरबल ने अपने आपको बचाया

एक बार बीरबल ने हॅसी हॅसी में बादशाह अकबर को कुछ कह दिया। पर बादशाह भी कोई बुद्धू तो थे नहीं। उनको बीरबल का वह मजाक बिल्कुल भी पसन्द नहीं आया सो उन्होंने बीरबल को अपने दरबार से ही नहीं बल्कि अपने शहर आगरा से ही निकल जाने का हुकुम दिया।

बीरबल ने भी अपना बोरिया बिस्तर उठाया और आगरा शहर छोड़ कर वहॉ से चले गये।

पर दो चार दिन ही बीते थे कि बादशाह को बीरबल की याद सताने लगी। उनको बीरबल के बिना कुछ भी अच्छा नहीं लगता था पर वह करें क्या? उनके पास कोई चारा नहीं था।

वह बीरबल को कैसे बुलायें, उसे कहॉ ढूँढें। उनको तो उनका पता ही नहीं था कि वह हैं कहॉ और लोगों को भी उनका पता नहीं था।

एक दिन एक अक्लमन्द साधु बादशाह के दरबार में आया और उसने उनको बीरबल को ढूँढने की तरकीब बतायी। अकबर को वह तरकीब समझ में आ गयी सो उन्होंने वैसा ही किया जैसा उस साधु ने उनसे करने के लिये कहा था।

उन्होंने अपने राज्य में मुनादी पिटवा दी कि जो कोई आदमी आधी धूप और आधी छॉह में उनके पास आयेगा बादशाह उसको एक हजार सोने की मुहरें देंगे।

मुनादी पिटवाना माने ढिंढोरा पिटवाना। इसमें शहर के चौराहों पर ढोल पीट कर राजा का आदेश या सन्देश जनता तक पहुँचा दिया जाता है। और मुहर कहते हैं सिक्के को। सो राजा ने आधी धूप और आधी छॉह में आने वाले को एक हजार सोने के सिक्के देने की मुनादी पिटवा दी।

अगले ही दिन एक गॉव वाला एक बान की चारपायी अपने सिर पर रख कर दरबार में आया और अपना इनाम मॉगा। उसने कहा कि वह आधी धूप और आधी छॉह में वहॉ तक आया था इसलिये उसको उसका इनाम दे दिया जाये।

अकबर समझ गये कि यह आदमी अपने आप तो यह काम कर नहीं सकता फिर किसने इसको ऐसा करने के लिये कहा। पूछताछ

करने पर पता चला कि बीरबल ने ही उसे यह करने के लिये कहा था।

अकबर यह सुन कर बहुत खुश हुए। उस गॉव वाले को तो उन्होंने अपनी मुनादी के मुताबिक **1000** सोने के सिक्के दे कर विदा किया और तुरन्त ही बीरबल को आगरा वापस बुला लिया।

और दोनों में फिर वही मसखरी चलने लगी।

13 बीरबल ने न्याय किया

बच्चों अब तक तो तुमको पता चल ही गया होगा कि बीरबल का दिमाग कितनी तेज़ी से चलता था और कठिन से कठिन समस्याऐं भी वह कितनी आसानी से और हॅसी हॅसी में सुलझा देते थे।

एक बार एक किसान ने एक आदमी से एक कुॅआ खरीदा। अगले दिन जब वह किसान उस कुॅए से पानी लाने गया तो उस आदमी ने उस किसान को उस कुॅए से पानी खींचने से मना कर दिया।

किसान बेचारा बहुत दुखी हुआ कि कुॅआ खरीद कर भी वह उस कुॅए का पानी इस्तेमाल नहीं कर सकता था। सो वह बादशाह अकबर के दरबार में आया और बादशाह से न्याय की प्रार्थना की।

बादशाह अकबर ने बीरबल को बुलाया और उनसे यह मामला सिलटाने के लिये कहा। बीरबल ने उस आदमी को बुलाया जिसने किसान को कुॅआ बेचा था।

बीरबल ने पूछा — "जब तुमने यह कुॅआ इस किसान को बेच दिया तो फिर तुम उसको उस कुॅए से पानी क्यों नहीं खींचने देते?"

वह आदमी चतुराई से बोला — "बीरबल, मैंने उसको कुॅआ बेचा है कुॅए का पानी नहीं। इसलिये वह उस कुॅए का पानी नहीं ले सकता।"

बीरबल भी कम नहीं थे। उन्होंने मुस्कुरा कर उस आदमी से कहा — "ठीक, लेकिन यह तो तुम मानते हो कि वह कुॅआ तुमने उस किसान को बेच दिया तो इस हिसाब से अब यह कुॅआ किसान का हो गया।

और तुम कहते हो कि यह पानी तुम्हारा है। तो तुमको भी इस किसान के कुॅए में अपना पानी रखने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह कुॅआ तो अब तुम उस किसान को बेच चुके।

तो या तो तुम किसान को अपना पानी उसके कुॅए में रखने के लिये किराया दो और या फिर अपना पानी उसके कुॅए से निकाल लो।"

उस आदमी की समझ में आ गया कि उसकी चाल बेकार गयी। उसने किसान को कुॅए से पानी खींचने की इजाज़त दे दी।

बच्चो, ऐसी ही एक कहानी इंगलैंड के महान कवि और नाटककार शेक्सपीयर ने भी लिखी है उसका नाम है "द मर्चेन्ट औफ वेनिस"। बहुत ही सुन्दर और अक्लमन्दी की कहानी है वह भी। तुमको कभी मौका मिले तो जरूर पढ़ना।[3]

14 केवल एक सवाल

बीरबल की अक्लमन्दी की प्रशंसा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। बीरबल की प्रशंसा सुन कर एक बार एक विद्वान बादशाह अकबर के दरबार में आया और उसने बीरबल को अपने एक सवाल का जवाब देने के लिये कहा।

वह विद्वान बीरबल की परीक्षा लेना चाहता था कि बीरबल वाकई उतने ही अक्लमन्द थे कि नहीं जितना कि उसने उनके बारे में सुन रखा था सो बीरबल ने कहा "पूछो।"

उसने बीरबल से पूछा — "तुम **100** आसान सवालों के जवाब देना ज़्यादा पसन्द करोगे या एक मुश्किल सवाल का?"

उस दिन अकबर और बीरबल दोनों ही कुछ थके हुए थे और घर जाने की जल्दी में थे सो बीरबल एक मुश्किल सवाल का जवाब देने के लिये राजी हो गये।

[3] This story has been given in the book "Nyaya Ki Kahaniyan" (Justice), by Sushma Gupta in Hindi language.

उस विद्वान ने बीरबल से पूछा — "पहले कौन आया, मुर्गी या अंडा?"

बीरबल ने बिना कुछ सोचे समझे जवाब दिया — "मुर्गी।"

यह सुन कर वह विद्वान बीरबल की हाजिर जवाबी पर दंग रह गया। वह उनसे पूछे बिना न रह सका — "तुम्हें कैसे पता?"

बीरबल तुरन्त बोले — "हम लोग केवल एक सवाल पर राजी हुए थे और उसका जवाब मैंने तुम्हें दे दिया इसलिये अब दूसरा कोई सवाल नहीं।" कह कर बीरबल और अकबर अपने अपने घर चले गये।

15 बीरबल ने एक ज्योतिषी की जान बचायी

एक बार बादशाह अकबर ने एक ज्योतिषी की बड़ी तारीफ सुनी कि वह बड़ी सही बात बताता था सो उन्होंने उस ज्योतिषी को अपने दरबार में बुलवा भेजा।

उन्होंने उससे कहा — "सुना है कि तुम बहुत सही बातें बताते हो।" ज्योतिषी यह सुनते ही कॉप गया। वह सोचने लगा कि आज तो वह बेमौत मारा जाने वाला है।

बादशाह आगे बोले — "यह बताओ कि तुम कब मरने वाले हो?"

ज्योतिषी कॉपते हुए बोला — "हुजूर मुझे अपनी कुंडली देखनी पड़ेगी।"

बादशाह बोले — "ठीक है, हम तुम्हें एक घंटे का समय देते हैं। तुम अपनी कुंडली देखो और हमें तुरन्त बताओ।"

जान बची और लाखों पाये। वह ज्योतिषी कुंडली देखने की बजाय भागा भागा बीरबल के पास आया और उनको सारा किस्सा बताया। बीरबल ने उसको ढॉढस बॅधाया और समझाया कि उसे क्या करना है।

ज्योतिषी एक घंटे के बाद दरबार में लौटा और बादशाह से बोला — "जहॉपनाह, मैं बादशाह से तीन दिन पहले मरूॅगा।"

बादशाह समझ गये कि ज्योतिषी झूठ बोल रहा था पर फिर भी वह कोई खतरा मोल नहीं लेना चाहते थे इसलिये उन्होंने उसे जाने दिया और इस तरह बीरबल ने उस ज्योतिषी की जान बचायी।

16 जल्दबाज़ी का फैसला

एक बार बादशाह अकबर अपने घोड़े पर सवार आम के एक बगीचे के पास से गुजर रहे थे कि एक तीर उनके बहुत ही करीब से हो कर गुजर गया। बादशाह डर गये। उनके सिपाही उस आम के

बगीचे में घुस गये और एक लड़के को पकड़ लाये जिसने वह तीर चलाया था।

बादशाह ने उस लड़के से पूछा कि वह बादशाह को क्यों मारना चाहता था। वह लड़का डरते हुए बोला कि वह बादशाह को बिल्कुल भी नहीं मारना चाहता था। वह तो केवल एक आम तोड़ना चाहता था ऊॅची शाख से। वह तीर इत्तफाक से बादशाह की तरफ आ गया।

बादशाह बहुत गुस्से में थे सो वह उस लड़के की कोई बात सुनने को तैयार ही नहीं थे। उन्होंने हुकुम दिया कि उस लड़के को उसी तरह मार दिया जाये जिस तरह वह उनको मारना चाहता था।

सो तुरन्त ही एक सिपाही ने उस लड़के को एक पेड़ के तने से बॉध दिया और तीर उसकी ओर साध कर खड़ा हो गया।

बीरबल भी वहीं पास में खड़े थे और यह तमाशा देख रहे थे। जब वह सिपाही लड़के को पेड़ से बॉध रहा था तब उनसे नहीं रहा गया, वह ज़ोर से बोले — "हुज़ूर, आप यह क्या कर रहे हैं यह ठीक नहीं है कि आप लड़के को बॉध कर मारें क्योंकि जब उसने तीर चलाया था तब आप भी बॅधे हुए नहीं थे।

दूसरे अगर आप उसको तीर मारना ही चाहते हैं तो उसी तरह मारिये जैसे उसने आपको मारा था। यानी आपका निशाना वह लड़का नहीं आम होना चाहिये और फिर उस तीर को आम को बचा कर लड़के को लगना चाहिये।"

अब तक बादशाह कुछ शान्त हो चुके थे। उनको लगा कि बीरबल ठीक कह रहे थे और वह उस लड़के के साथ अन्याय कर रहे थे। उन्होंने तुरन्त ही अपने सिपाही को उस लड़के को छोड़ देने का हुक्म दे दिया।

तो इस तरह बची उस लड़के की जान।

17 बीरबल ने इम्तिहान पास किया

बच्चों एक बार एक पंडित बादशाह अकबर के दरबार में आया और उसने उनके दरबारियों की परीक्षा लेनी चाही। बादशाह राजी हो गये। एक नियत समय पर सारे दरबारी इकट्ठा हुए।

उस पंडित के पास एक लोटा था जो एक कपड़े से ढका था। उसने वह लोटा बीच में रख दिया और सबसे पूछा कि उस लोटे में क्या है।

अब वह लोटा तो कपड़े से ढका हुआ था कैसे पता चले कि उस लोटे में क्या था। सारे दरबारी परेशान से चुपचाप बैठे थे, न कुछ बोल पा रहे थे न कुछ बता पा रहे थे।

आखिर बीरबल उठे। उन्होंने लोटे पर से कपड़ा हटाया, उसके अन्दर झॉका और बोले — "इस लोटे के अन्दर तो कुछ भी नहीं है यह खाली है।"

पंडित बोला — "मगर तुमने तो यह तब बताया जब तुमने उस पर से कपड़ा हटा कर देख लिया।"

बीरबल तुरन्त बोले — "पर पंडित जी आपने तो ऐसा कुछ नहीं कहा था कि बरतन को खोलना नहीं है।"

पंडित समझ गया कि यहॉ वह गलती कर गया। उसने बादशाह को सिर झुकाया, बीरबल की तारीफ की और चला गया।

18 भारी बोझा

एक बार एक औरत बीरबल के पास उनसे सहायता मॉगने गयी। उसने बीरबल से कहा — "बीरबल, बादशाह अकबर मेरी जमीन पर जहॉ मेरा घर है एक बिल्डिंग बनवाना चाहते हैं। हम वहॉ पर बहुत साल से रहते चले आ रहे हैं इसलिये हम वहॉ से हटना नहीं चाहते।"

बीरबल ने उसको ढॉढस बॅधाया और कहा कि वह अपनी पूरी कोशिश करेगा कि वहॉ वह बिल्डिंग न बने।

कुछ दिनों बाद उस जमीन पर काम शुरू हो गया। एक दिन बादशाह अकबर उस जगह को देखने गये। बीरबल भी उनके साथ थे। एक जगह पर बीरबल ने बहुत सारी बोरियॉ रखी देखीं पास ही

रेत का ढेर पड़ा था सो उन्होंने वे बोरियॉ रेत से भरनी शुरू कर दीं।

बादशाह ने बीरबल से पूछा — " बीरबल, यह तुम क्या कर रहे हो?"

बीरबल बोले, "मैं अगले जन्म के लिये कुछ पुन्य कमा रहा हूॅ।" अकबर को यह सुन कर बड़ा आनन्द आया और वह भी बीरबल के साथ बोरियॉ रेत से भरने लग गये।

थोड़ी सी बोरियॉ भर जाने के बाद बीरबल ने बादशाह अकबर से एक बोरी उठाने के लिये कहा। अकबर ने बोरी उठाते हुए कहा — "अरे बीरबल, यह बोरी तो बहुत भारी है।"

बीरबल बोले — "ज़रा सोचिये हुजूर, जब इस जमीन की यह एक बोरी मिट्टी आपको इतनी भारी लग रही है तो इस पूरी ज़मीन की मिट्टी से जब आपकी बिल्डिंग बन जायेगी तब वह आपको कितनी भारी लगेगी?"

अकबर समझ गये कि बीरबल क्या कहना चाहते थे। उन्होंने तुरन्त ही उस ज़मीन पर काम बन्द करा दिया।

19 बीरबल की खिचड़ी

बीरबल की यह कहानी बहुत मशहूर है और इतनी मशहूर है कि अब तो यह एक मुहावरा बन गया है – बीरबल की खिचड़ी पकाना[4]। पर तुमको शायद यह पता नहीं होगा कि यह मुहावरा बना कैसे। तो लो सुनो यह कहानी।

जाड़े का समय था। सारे तालाबों का पानी जमने जैसा हो रहा था। अकबर और बीरबल अपने शाही बागीचे में सैर कर रहे थे।

ठंड महसूस करने के लिये वादशाह अकबर ने एक तालाब के पानी में हाथ डाला और तुरन्त ही बाहर निकाल लिया। उस पानी की ठंड महासूस करके वादशाह के दिमाग में एक खयाल आया और उन्होंने बीरबल से पूछा — "बीरबल, क्या कोई आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है?"

बीरबल बोले — "जी जनाब, अगर उसको पैसों की वाकई जरूरत हो तो।"

बादशाह बोले — "अच्छा तो इसको साबित करो।"

अगले दिन बीरबल एक बहुत ही गरीब आदमी को ले कर आये जिसके पास कोई पैसा नहीं था और बोले — "हुजूर यह आदमी पैसों के लिये कुछ भी कर सकता है।"

---

[4] Read the stories of about the origin of many proverbs as how did they come into being in the book "Kahavaton Ke Janm Ki Kahaniyan" (Proverbs), by Sushma Gupta in Hindi language.

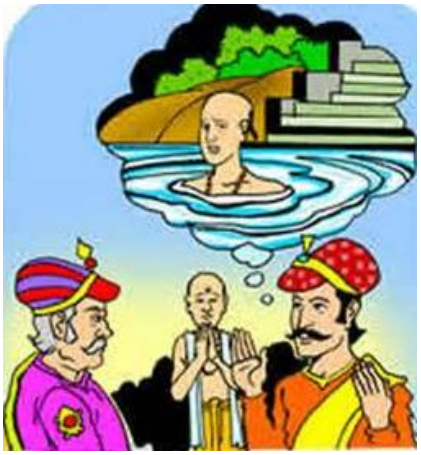

बादशाह उस आदमी से बोले — "क्या तुम सरदी की इस रात में एक रात यमुना के ठंडे पानी में खड़े हो कर गुजार सकोगे? अगर तुम गुजार सकते हो तो हम तुम्हें सोने की **1000** मुहरें देंगे।"

अब **1000** मुहरें तो बहुत होती हैं। वह गरीब आदमी बेचारा उन **1000** मुहरों के लालच में आ गया और वह उस सरदी की रात यमुना के पानी में गुजारने चला गया।

सरदी बहुत थी पर **1000** सोने की मुहरें भी उसके लिये कम नहीं थीं। बादशाह के कुछ चौकीदार भी वहॉ खड़े थे, यह देखने के लिये कि वह वाकई उस ठंडे पानी में खड़ा रहा कि नहीं और उसने कोई धोखा तो नहीं किया।

अगले दिन वह अपना इनाम लेने के लिये बादशाह के दरबार में पहुँचा तो बादशाह ने उससे पूछा — "यह तो बताओ कि तुम इतने ठंडे पानी में सारी रात कैसे खड़े रहे?"

आदमी बोला — "सरकार, करीब **500** गज की दूरी पर एक लैम्प पोस्ट जल रहा था मैं बस वही देख कर खड़ा रहा।"

यह सुन कर बादशाह ने कहा कि यह आदमी इस इनाम के लायक नहीं है क्योंकि वह आदमी यकीनन उस लैम्प पोस्ट से गरमी ले रहा था इसलिये वह पूरी तरीके से उस ठंडी रात में पानी में खड़ा नहीं रहा।

यह सुन कर वह गरीब आदमी बेचारा बहुत ही निराश हुआ कि वह बेचारा सारी रात तो उस सरदी की रात में यमुना के ठंडे पानी में खड़ा रहा और उसे इनाम भी नहीं मिला।

बीरबल भी यह सब सुन रहे थे। उनको बादशाह का यह तर्क बिल्कुल भी ठीक नहीं लगा कि **500** गज दूर से वह आदमी उस लैम्प पोस्ट से गरमी ले रहा था। उस समय तो उन्होंने कुछ कहना ठीक नहीं समझा पर उन्होंने सोच लिया कि वह बादशाह को इसका जवाब जरूर देंगे।

अगले दिन बीरबल बहुत देर तक दरबार नहीं गये। वादशाह ने उनका बहुत देर तक इन्तजार किया पर फिर भी जब वह नहीं आये तो उन्होंने अपने एक आदमी को उनके घर भेजा कि देख कर आओ कि आज बीरबल दरबार में क्यों नहीं आये।

नौकर ने वापस आ कर बादशाह को बताया कि बीरबल खिचड़ी पका रहे हैं। वह कहते हैं कि जब उनकी खिचड़ी पक जायेगी तब वह अपनी खिचड़ी खा कर दरबार में आयेंगे।

एक घंटा हुआ, दो घंटे हुए, तीन घंटे हुए पर बीरबल की खिचड़ी अभी तक नहीं पकी थी। ऐसी कैसी खिचड़ी थी बीरबल की जो इतनी देर के बाद भी नहीं पकी थी?

नौकर कई बार जा कर वापस आ चुका था पर बीरबल के आने के कोई आसार नहीं थे सो इस बार बादशाह ने खुद जा कर देखने का विचार किया।

बादशाह बीरबल के घर गये। बादशाह को अपने घर आया जान कर बीरबल बादशाह को लेने बाहर आये और उनको बड़े आदर से अन्दर ले गये।

बादशाह ने बताया कि क्योंकि बीरबल बहुत देर से दरबार में नहीं आये थे इसलिये वह बीरबल को खुद ही देखने के लिये चले आये थे।

बीरबल बोले — "सरकार, मैं अपनी खिचड़ी बना रहा था। जैसे ही मेरी खिचड़ी बन जायेगी मैं खिचड़ी खा कर तुरन्त ही आता हूॅ।"

"क्या मैं तुम्हारी खिचड़ी देख सकता हूॅ कहॉ है वह?"

"क्यों नहीं, जरूर सरकार।" कह कर बीरबल उनको वहॉ ले गये जहॉ उनकी खिचड़ी बन रही थी।

बादशाह को यह देख कर बड़ा ताज्जुब हुआ कि खिचड़ी की हॉडी एक पेड़ की बड़ी ऊॅची सी शाख पर लटक रही थी और नीचे जमीन पर दो लकड़ियों की सहायता से आग जल रही थी।

बादशाह से पूछे बिना नहीं रहा गया — "बीरबल, इस तरह से तो यह तुम्हारी खिचड़ी जिन्दगी भर तक नहीं पकने की। इतनी दूर से इतनी कम आग से खिचड़ी कैसे पकेगी? तुम्हें क्या हो गया है?"

बीरबल बोले — "सरकार, यह खिचड़ी भी उसी तरह पकेगी जिस तरह से उस लैम्प पोस्ट से उस गरीब आदमी को **500** गज दूरी से गरमी मिल रही थी।"

बादशाह समझ गये कि उन्होंने उस गरीब आदमी को उसका इनाम न दे कर बड़ा अन्याय किया। बादशाह बीरबल का जवाब सुन कर उलटे पैरों दरबार वापस लौट गये और उस गरीब आदमी को दरबार में फिर से पेश करने का हुकुम दिया।

तुरन्त ही वह आदमी दरबार में लाया गया। बादशाह ने उसको उसका **1200** सोने के सिक्के इनाम दे कर आदर सहित विदा किया।

इस तरह बीरबल ने उस गरीब आदमी को उसका इनाम दिलवाया।

आज भी जब किसी काम में किसी को असाधारण रूप से देरी होती है तो लोग कहते हैं "अरे, क्या कर रहे थे? क्या बीरबल की खिचड़ी पका रहे थे?"

20 ऊँट का दूध

वीरबल की यह कहानी भी बहुत मजेदार है।

दरबार में बीरबल से बहुत सारे लोग जला करते थे क्योंकि बीरबल बादशाह को बहुत प्यारे थे और वह हर बात मे उनसे सलाह लिया करते थे। उधर बीरबल भी हर काम में उनसे बाजी मार ले जाया करते थे जो उनको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता था। सो एक दिन मौका मिलते ही उन्होंने बीरबल को नीचा दिखाने की सोची।

बादशाह के महल में किसी को एक घाव हो गया। शाही वैद्य बुलाया गया। उसने बादशाह को सुझाया कि वह घाव तभी ठीक हो सकता था जब उस पर ऊँट का दूध लगाया जाये।

बादशाह ने अपने दरबार में सबसे ऊँट का दूध लाने के लिये कहा। अब ऊँट का दूध कहॉ से लाया जाये। सारे दरबारी चुपचाप बैठे रहे कुछ न बोल सके। पर क्योंकि दरबारियों को तो बीरबल को नीचा दिखाना था सो सबने बीरबल का नाम सुझाया कि वही एक हैं जो ऊँट का दूध ला सकते हैं।

आखिर यह काम बीरबल को सौंपा गया। बीरबल ने बादशाह को बहुत समझाने की कोशिश की कि ऊँट का दूध नहीं होता पर बादशाह को तो घाव ठीक करना था और जब शाही वैद्य ने बताया था वह घाव ऊँट के दूध से ठीक हो सकता था तो ऊँट का दूध

जरूर होता होगा। शाही वैद्य झूठ थोड़े ही बोल सकता है।

बीरबल समझ गये कि यह दरबारियों की कोई चाल है उनको नीचा दिखाने की। बीरबल ने फिर एक तरकीब सोची। अगले दिन बीरबल दरबार नहीं गये। जब बादशाह ने बीरबल को दरबार में नहीं देखा तो पूछा कि बीरबल कहॉ हैं और क्यों नहीं आये।

किसी को कुछ पता नहीं था कि बीरबल कहॉ हैं सो उनके घर एक आदमी भेज कर पुछवाया गया कि वह ठीक तो हैं।

जब वह नौकर बीरबल के घर पहुॅचा तो घर के बाहर ही बीरबल की लड़की कपड़े धो रही थी। नौकर ने उसी से पूछा कि आज बीरबल दरबार नहीं आये क्या बात है।

लड़की ने जवाब दिया — "रात बीरबल के बच्चा हुआ है इसी लिये वह दरबार नहीं आ पाये।" नौकर को यह जवाब कुछ अटपटा लगा पर वह लौट गया और बादशाह को बता दिया कि बीरबल को कल रात बच्चा हुआ है इसलिये वह दरबार में नहीं आये।

यह अटपटा जवाब सुन कर बादशाह का गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ गया और वह खुद बीरबल के घर जा पहुॅचे सच्चाई जानने के लिये।

बीरबल बोला — "जहॉपनाह, जब ऊॅट दूध दे सकता है तो मेरे बच्चा क्यों नहीं हो सकता?"

बादशाह यह सुन कर बहुत शरमिन्दा हुए और वापस चले गये। उन्होंने अपना हुकुम रद्द कर दिया और शाही वैद्य को बुला कर बहुत डॉटा।

21 पिंजरे का शेर

जैसा कि तुम्हें पता ही है कि बीरबल की अक्लमन्दी और हाजिरजवाबी की प्रशंसा बहुत दूर दूर तक फैली हुई थी। यहॉ तक कि दूसरे देशों में भी फैली हुई थी।

तो बीरबल की प्रशंसा सुन कर एक बार एक राज्य के राजा ने अपने एक आदमी को बादशाह अकबर के दरबार में बीरबल का इम्तिहान लेने के लिये भेजा।

वह आदमी हिन्दुस्तान आया और बादशाह अकबर के दरबार में हाजिर हुआ। वह अपने साथ एक बहुत बड़ा पिंजरा लाया था जिसमें एक शेर बन्द था।

उसने वह पिंजरा दरबार में बादशाह के सामने रख दिया और बोला — "बादशाह सलामत, यह शेर इस पिंजरे में बन्द है। हमारे राजा का कहना है कि आपके दरबार में जो कोई भी इस शेर को बिना पिंजरा खोले बाहर निकाल देगा उसको ये सोने की मुहरें दीं जायेंगी।"

कह कर उसने सोने की मुहरों से भरा एक थैला वहीं पिंजरे के पास ही रख दिया।

बादशाह ने अपने सब दरबारियों से कहा कि वे उस शेर को पिंजरे में से बिना पिंजरा खोले निकालने की कोशिश करें।

बहुत सारे दरबारी उठे, उन्होंने उस पिंजरे को इधर से देखा उधर से देखा, ऊपर से देखा नीचे से देखा पर समझ न पाये कि उस शेर को पिंजरे में से बिना पिंजरा खोले कैसे निकाला जाये। वे सभी मुँह लटका कर बैठ गये।

अब बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा कि वह शेर को बिना पिंजरा खोले पिंजरे में से बाहर निकालें। बीरबल ने भी उस पिंजरे को इधर से देखा उधर से देखा, ऊपर से देखा नीचे से देखा और फिर बोले — "हुजूर, आग मँगवायी जाये, मैं इस पिंजरे को गरम करना चाहता हूँ।"

यह सुन कर सब लोग बड़े आश्चर्य में पड़ गये। ज़रा सोच कर बताओ बच्चो कि बीरबल ने आग क्यों मँगवायी और उस आग से वह शेर को पिंजरे में से बाहर कैसे निकालते?

जो तुम सोच रहे हो यही बात वहाँ दरबार में बैठे सब दरबारियों ने भी कही। वे बोले — "पिंजरा गरम करने से तो शेर मर जायेगा।"

पर जब बीरबल ने कहा है कि आग मॅगवायी जाये तो आग मॅगवायी गयी। बीरबल ने आग से पिंजरा गरम किया और कुछ देर में ही शेर बाहर आ गया।

क्या तुम अब बता सकते हो कि बीरबल ने वह शेर बिना पिंजरा खोले बाहर कैसे निकाल दिया? बच्चो, वह शेर असली था ही नहीं। वह शेर तो मोम का बना था। जैसे ही पिंजरा गरम हुआ वह शेर पिघल गया।

बीरबल ने उसको देखते ही पहचान लिया था कि वह शेर मोम का बना हुआ था। इसी लिये बीरबल ने आग मॅगवायी, पिंजरा गरम किया और वह शेर पिघल कर बाहर आ गया।

बाहर पड़े मोम के ढेर की तरफ इशारा करते हुए उन्होंने उस आदमी से कहा — "लो यह रहा तुम्हारा शेर। इसे ले जा कर अपने राजा को दे देना।"

यह कह कर बीरबल ने सोने की मुहरों की थैली उठायी और अपनी जगह पर आ कर बैठ गये।

22 राज्य में कितने कौए

एक बार ईरान देश से नसीर पाशा नाम का एक बहुत बड़ा विद्वान बादशाह अकबर के दरबार में आया। हालॉकि वह एक बहुत बड़ा विद्वान था पर वह जिद्दी और अकड़ू भी बहुत था।

उसने बादशाह से कहा — "ओ हिन्दुस्तान के बादशाह, ईरान तक में यह मशहूर है कि आपके दरबार में बहुत अक्लमन्द मन्त्री हैं, बहुत होशियार कलाकार हैं और आपकी सेना में बहुत होशियार कमान्डर हैं।

मैं इतनी दूर से आपकी राजधानी में उनको अपनी ऑखों से देखने के लिये आया हूॅ। मैं ईरान के बादशाह के दरबार में खुद न तो कोई कलाकार हूॅ और न ही किसी सेना का कोई आदमी हूॅ पर वहॉ मैं सबसे ज़्यादा होशियार आदमी समझा जाता हूॅ।

मैं अपनी अक्लमन्दी और हाजिरजवाबी का आपके किसी भी दरबारी से मुकाबला करने आया हूॅ। मेहरबानी करके मुझे इजाज़त दी जाये।"

बादशाह को ऐसे मुकाबले बहुत पसन्द आते थे क्योंकि हालॉकि वह खुद तो पढ़े लिखे नहीं थे पर वह अक्लमन्द लोगों की बहुत इज़्ज़त करते थे और यह देखते थे कि उनके राज्य में उनकी ठीक

से इज़्ज़त हो और उनको उसका ठीक से इनाम मिले। पर उनको अकड़ूपन बिल्कुल पसन्द नहीं था।

बादशाह को पाशा कुछ अकड़ू लगा तो उनको यह अच्छा नहीं लगा। उन्होंने सोचा कि उसका यह अकड़ूपन तोड़ा जाये।

बादशाह को बीरबल पर पूरा भरोसा था और वह पाशा के घमंड को तोड़ना चाहते थे सो उन्होंने इस मुकाबले की इजाज़त दे दी।

उन्होंने फिर बीरबल से कहा — "बीरबल, तुमने नसीर पाशा को सुना कि उसने क्या कहा? हमारे मन्त्रियों में से तुम इनसे बात करो और मुकाबले की तैयारी करो।"

बीरबल सिर झुका कर बोले — "जो हुकुम सरकार।" बीरबल भी होशियारी और हाजिरजवाबी के ऐसे मुकाबलों के लिये हमेशा तैयार रहते थे।

पाशा बोला — "ओ बीरबल, तुम बादशाह अकबर के सबसे ज़्यादा होशियार मन्त्री हो। मैं तुमसे केवल एक सवाल का जवाब चाहता हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि तुम्हारी दिल्ली में इस समय कितने कौए हैं?"

अकबर और उनके दरबारी यह अजीब सा सवाल सुन कर आश्चर्य में पड़ गये कि यह कैसा सवाल है पर बीरबल बिल्कुल शान्त थे।

बीरबल बोले — "पाशा, तुमने बहुत ही अच्छा सवाल पूछा है। मुझे कल तक का समय दो ताकि मैं उनको गिन कर तुमको उनकी ठीक ठीक गिनती बता सकूँ।"

नसीर पाशा बोला — "ठीक है।" पाशा को यकीन था कि बीरबल कौओं को कभी नहीं गिन पायेगा।

अगले दिन बादशाह का दरबार लगा। बादशाह के सभी मन्त्री मौजूद थे। बीरबल भी थे। पाशा भी आये। पाशा को विश्वास था कि आज वह बीरबल को हरा कर ही रहेगा।

जब सब आराम से बैठ गये तो बादशाह अकबर बीरबल से बोले — "बीरबल, क्या तुम नसीर पाशा के सवाल का जवाब देने के लिये तैयार हो?"

बीरबल हाथ में एक छोटा सा कागज पकड़े बोले — "जी हुजूर।" कह कर उन्होंने उस कागज में से पढ़ा **43576** कौए।

फिर वह पाशा की तरफ मुड़े और बोले — "पाशा जी, आप चाहें तो खुद अपने आप इनको गिन सकते हैं। अगर आपकी गिनती मेरी गिनती से ज़्यादा हो तो समझिये कि वे ज़्यादा कौए पास के गॉव से राजधानी घूमने के लिये आये हैं।

और अगर आपके कौओं की गिनती मेरी गिनती से कम हो तो समझिये कि उतने कौए राजधानी से बाहर घूमने के लिये गये हुए हैं।"

बीरबल का यह चतुराई भरा जवाब सुन कर बादशाह और उनके दरबारियों ने सबने मिल कर बीरबल के जीतने की खुशी में खूब तालियॉ बजायीं।

नसीर पाशा समझ गया कि वह यहॉ हार गया है। उसका घमंड टूट गया था और वह बादशाह को सलाम कर के ईरान वापस चला गया।

23 अकबर का लालच

मुसलमानों का रमज़ान का महीना चल रहा था। इस महीने में मुसलमान सारा दिन रोज़ा या व्रत रखते हैं फिर शाम को सूरज छिपने के बाद ही खाते हैं। इसको रोज़ा इफ़्तियारना बोलते हैं। और फिर सुबह सूरज निकलने से पहले खाना बन्द कर देते हैं।

रमज़ान के महीने में बादशाह अकबर जब अपना रोज़ा इफ़्तियारते थे तो उनके साथ उनके बहुत सारे दरबारी लोग भी अपना रोज़ा इफ़्तियारते थे।

ऐसे ही एक दिन एक शाम रोज़ा इफ़्तियारते समय बीरबल भी उनके साथ थे।

खाना खाने के बाद खजूर खाने का दौर चला। सब लोग अपनी अपनी कुरसियों पर बैठे हुए खजूर खा रहे थे। वे खजूर

खाते जाते थे और उनकी गुठलियॉ अपनी अपनी कुरसियों के नीचे फेंकते जाते थे। बीरबल बादशाह की कुरसी के पास बैठे थे।

धीरे धीरे सबकी कुरसियों के नीचे खजूर की गुठलियों का ढेर लगता चला गया। गुठलियों के ढेर को बढ़ता देख कर बादशाह को शरारत सूझी।

चारों तरफ सावधानी से देखते हुए जब कोई उनकी तरफ नहीं देख रहा था तो बादशाह ने अपनी कुरसी के नीचे की खजूर की गुठलियॉ धीरे से अपना पैर मार कर बीरबल की कुरसी के नीचे खिसका दीं।

कुछ पल बाद ही बादशाह बीरबल की कुरसी के नीचे की तरफ इशारा करते हुए जोर से बोले — "बीरबल, तुम तो बहुत ही लालची हो। देखो तो तुमने कितने सारे खजूर खाये हैं। तुम्हारी कुरसी के नीचे कितनी सारी गुठलियॉ हैं।"

वहॉ बैठे सारे लोगों का ध्यान बीरबल की तरफ गया तो वे बीरबल की तरफ देख कर हॅसने लगे और उनका मजाक बनाने लगे।

बीरबल समझ गये कि बादशाह ने उनके साथ चाल खेली है। उन्होंने चारों तरफ अपनी निगाह घुमायी तो देखा कि सब लोगों की कुरसियों के नीचे खजूरों की गुठलियॉ पड़ी हुई हैं पर बादशाह की कुरसी के नीचे खजूर की कोई गुठली नहीं पड़ी है।

शान्ति से बीरबल बोले — "हुजूर, मेरे लिये तो लालची होना ठीक है क्योंकि मैं तो आपका एक छोटा सा मन्त्री हूॅ। कम से कम मैंने तो केवल खजूर ही खाये हैं खजूर की गुठलियॉ तो छोड़ दी हैं पर आपने तो लालच में आ कर खजूर के साथ साथ उनकी गुठलियॉ भी खा लीं हैं।"

यह सुन कर राजा बहुत शरमिन्दा हुए। उनकी बात उन्हीं के सिर आ पड़ी थी।

24 आम और उसकी गुठलियॉ

यह भी इससे पहले वाली जैसी ही कहानी है। इस कहानी में बादशाह अकबर और बीरबल आम खा रहे थे। बादशाह को कुछ शरारत सूझी तो उन्होंने अपने आम खा कर उसकी गुठलियॉ बीरबल के सामने रखनी शुरू कर दीं।

कुछ देर बाद बीरबल ने देखा कि उनके सामने तो आम की बहुत सारी गुठलियॉ जमा हो गयी हैं और बादशाह के सामने एक भी गुठली नहीं है। बीरबल चुप रहे और अपने आम खाते रहे।

कुछ देर बाद बादशाह बोले — "बीरबल आम खाने में इतना भी क्या लालच करना कि आदमी इतने सारे आम एक साथ खा जाये। देखो न कितनी सारी गुठलियॉ पड़ी हैं तुम्हारे सामने।"

बीरबल तो इसका जवाब देने के लिये तैयार बैठे थे वह बोले — "हुजूर मैंने तो केवल आम ही खाये हैं पर आपका लालच तो मेरे लालच से भी बड़ा है कि आपने तो आम खाये तो खाये आमों की गुठलियॉ भी खा लीं।"

बीरबल की यह बात सुन कर बादशाह बहुत शरमिन्दा हुए।

25 कुछ छोटी छोटी कहानियॉ

सच और झूठ में फर्क

एक बार बादशाह अकबर ने अपने राज दरबारियों से पूछा — "कौन बतायेगा केवल तीन शब्दों में कि झूठ और सच में कितना फर्क है?"

सारे दरबारी उन तीन या कम शब्दों के बारे में सोचने लगे जो सच और झूठ के फर्क को बता सकें लेकिन काफी समय बीत गया और दरबारी लोग नहीं बता सके।

तब राजा ने बीरबल से पूछा। बीरबल ने थोड़ा सा इधर उधर देख कर कहा — "हुजूर, चार अंगुल का।"

बादशाह बीरबल का जवाब सुन कर दंग रह गये फिर बोले "ऐसा कैसे?"

बीरबल बोले — "ऐसा ही है हुजूर। क्योंकि आपकी ऑखें सच देखती है परन्तु आपके कान अक्सर झूठ भी सुनते हैं और ऑख और कान में केवल चार अंगुल का फर्क है।"

छोटी लाइन बड़ी लाइन

एक दिन बादशाह अकबर ने जमीन पर एक लाइन खींची और अपने राज दरबारियों से कहा कि उनमें से कोई भी उस लाइन को छुए बिना ही छोटा कर दे।

जब कोई भी दरबारी उस लाइन को बिना छुए छोटा न कर सका तो अकबर ने बीरबल से यह करने के लिये कहा।

बीरबल तुरन्त उठे और उस लाइन के बराबर में एक बड़ी लाइन खींच दी। अब अकबर की लाइन बीरबल की लाइन से छोटी थी।

चॉद और सूरज क्या नहीं देख सकते□

एक बार बच्चों बादशाह ने अपने राज दरबार में पूछा — "ऐसी कौन सी चीज़ है जिसे सब लोग देख सकते हैं परन्तु चॉद और सूरज नहीं देख सकते।"

यह एक ऐसा सवाल था जिसका जवाब किसी को नहीं आ सकता था क्यों कि चॉद सूरज की रोशनी में तो हर आदमी हर चीज़

देख सकता है फिर चॉद और सूरज जहॉ हों वहॉ कौन सी चीज़ ऐसी हो सकती है जिसे वे खुद भी नहीं देख सकते।

हर बार की तरह इस बार भी जवाब बीरबल ने ही दिया, "अॅधेरा हुज़ूर। चॉद और सूरज अॅधेरा नहीं देख सकते।"

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group

https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहॉ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहॉ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहॉ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहॉ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहॉ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहॉ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**